(1)

⑤ भारवि की शैली का वर्णन करें

Style of Bharavi's.

V.V.S.I.

कविकुलगुरु कालिदास के दाय को ग्रहण करने वाले कवियों ने उनकी काव्यपरम्परा को ठीक उसी दिशा में आगे नहीं बढ़ाया। कालिदास के उत्तराधिकारियों ने कालिदास की काव्यपरम्परा के "रीति" (Rhetoric) पक्ष को, उनकी अभिव्यंजना शैली के दाय को ग्रहण किया, और अभिप्राय, कथावस्तु के निर्वाह तथा भावपक्ष की मार्मिकता की ओर उतना ध्यान नहीं दिया। कालिदास की कला में भावपक्ष तथा कलापक्ष का जो समन्वय, महाकाव्य के इतिवृत्त की जो अनवहेलना पाई जाती है, वह कालिदास के पश्चाद्भावी कवियों में धीरे-धीरे मिटती गई और कोरा कलापक्ष इतना बढ़ता गया कि महाकाव्य नाममात्र के महाकाव्य रह गये। मानव जीवन का जो विस्तृत सर्वांगीण चित्र महाकाव्य के लिए आवश्यक है, वह यहाँ लुप्त हो गया। महाकाव्य केवल पाण्डित्य तथा कलाप्रदर्शन के क्षेत्र रह गये। भारवि, भट्टि, माघ तथा श्रीहर्ष इन चारों महाकवियों में यही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। इन काव्यों में महाकाव्य की रूढ़ शैली दिखाई पड़ती है, जिसमें इतिवृत्त और कथा-संविधान को आधार बनाकर काव्य-कला का सुन्दर ताना-बाना बुनना ही ~~काव्य~~ कवियों का चरम लक्ष्य रह गया। भामह तथा दण्डी ने अपने अलंकार ग्रन्थों में महाकाव्य के जो लक्षण तथा विशेषताएँ बताई हैं, बाद के कवियों में वे विशेषताएँ अधिक ~~रूप में~~ रूढ़ रूप में पाई जाती हैं। भामह तथा दण्डी की परिभाषा इन पिछले ढर्रे के काव्यों के आधार पर बनाई गई थी। संभवतः भारवि के किरातार्जुनीयम् के आधार पर ही भामह तथा दण्डी ने महाकाव्य का लक्षण निबद्ध किया हो, और बाद के काव्यों के लिए वह पथ-प्रदर्शक बन गया हो। इस प्रकार संस्कृत-साहित्य में महाकवि भारवि महाकाव्यों के एक नई शैली, एक नई प्रवृत्ति को जन्म देने वाले हैं।

कालिदास तथा भारवि के बीच निश्चित रूप से १२० वर्ष का समय माना जा सकता है। इस बीच काव्य के कलापक्ष को अधिक से अधिक —

कृत्रिम सौन्दर्य प्रदान करने की अभिरुचि ने कवियों को नई दिशा में प्रेरित किया होगा। कालिदास तथा भारवि के बीच के काव्यों का पता नहीं, केवल वातास भट्टि-वाला 'मन्दसौर शिलालेख' ही इस बीच की कड़ी का उपलब्ध प्रमाण है। कालिदास की काव्य सरणि से इतर काव्य की विषय-वस्तु की अपेक्षा वर्णन-शैली के सौन्दर्य, भावपक्ष की ओर ध्यान न देकर कहने के ढंग पर महत्त्व देने की प्रणाली का सर्वप्रथम प्रौढ़ रूप जिस काव्य में मिलता है, वह है महाकवि-भारवि का किरातार्जुनीयम्।

भारवि की काव्य प्रतिभा पर कहने से पहले काव्य के सम्बन्ध में भारवि के स्वयं के मत को जानना चाहिए। भारवि कलापक्ष के कवि हैं पर कलापक्ष में भी उनका अधिक ध्यान माघ की तरह शब्द तथा अर्थ दोनों की गम्भीरता पर नहीं जान पड़ता, न नैषध के यशस्वी कलावादी की तरह प्रौढ़ोक्ति की लम्बी उड़ान, पदलालित्य और 'परिरम्भ क्रीड़ा' पर ही। भारवि में भी ये बातें आते हैं, पर भारवि इन्हें गौण मानते हैं, उनका विशेष ध्यान अर्थ-गाम्भीर्य पर रहा है। यही कारण है कि पुराने पण्डितों ने 'भारवेरर्थगौरवम्' कहा था। भारवि शब्दों की कृत्रिमता के फेर में हमेशा नहीं पड़ते। इनकी शाब्दी-क्रीड़ा (Lejeuxdemots) केवल पाँचवें तथा पन्द्रहवें सर्ग में ही मिलेगी। भारवि श्लेष के शौकीन हैं, पर माघ या श्रीहर्ष जितने नहीं। उनका कला सम्बन्धी सिद्धान्त यही जान पड़ता है — काव्य के पद प्रयोग में अस्पष्टता न हो, अर्थगाम्भीर्य पर खास तौर पर ध्यान दिया जाय, वाणी के अर्थ में पौनरुक्त्य न होने पाये और अर्थ सामर्थ्य (अपेक्षा) को कुचल न दिया जाय। —

"स्फुटता न पदैरपाकृता नचन स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित् (2.26)

इस कसौटी को लेकर भारवि के सोने को परख करेंगे, तो वह खरा सिद्ध होगा।

कालिदास की कथावस्तु क्या कुमारसंभव क्या रघुवंश दोनों में ही निश्चितरूपेण मन्थर गति से बढ़ती है, बीच-बीच में एक से एक सुन्दर वर्णन आते हैं, पर कालिदास का कवि-हृदय अपने सहृदय पाठक की मनोवैज्ञानिक स्थिति को खूब अच्छी तरह पहचानता है, और इसके पहले कि पाठक एक ही वर्णन के पिष्टपेषण को पढ़-पढ़कर ऊब जाँय, वह कथासूत्र पकड़कर आगे बढ़ जाता है। संभवतः अपनी सफल नाट्यकला से उन्हें ये चतुरता मिली है। भारवि, माघ या श्रीहर्ष में यह बात नहीं, वे जहाँ जमते हैं आसन बाँधकर बैठ जाते हैं, किसी वर्ण्य विषय पर दिमाग का (दिल का नहीं) सारा गुब्बार निकाल लेते हैं और जब एक विषय से सम्बद्ध शब्द संहति, अलंकार वैचित्र्य, कल्पना-शक्ति का खजाना पूरा खाली हो जाता है, तब आगे बढ़ने का नाम लेते हैं। भारवि में फिर भी गनीमत है, माघ तथा श्रीहर्ष इस कला के पूरे उस्ताद हैं।

पर भारवि में कई स्थल प्रभावोत्पादकता से समवेत हैं। समग्र काव्य चाहे रघुवंश जैसा स्थिर प्रभाव (Lasting effect) न डाले, ये स्थल सहृदय पाठक के दिल और दिमाग दोनों पर प्रभाव डालने में पूर्णतः समर्थ हैं। भारवि वीर तथा शृंगार के कवि हैं। आरंभ में दूसरे सर्ग म की उक्तियाँ वीर रसोचित दर्प से भरी पड़ी हैं। भीम यह कभी नहीं चाहता कि उन्हें दुर्योधन की कृपा से राज्य मिल जाय। उसके मत में, अपने तेज से सारे संसार को उन्नत बनाने वाला महान् व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की कृपा से ऐश्वर्य प्राप्त करना नहीं चाहता। सिंह अपने ही हाथों से मारे हुए दान जल से सिक्त हाथियों को अपनी जीविका-वृत्ति बनाता है। —

मदासिक्तमुखैर्मृगाधिपः करिभिर्वर्तयते स्वयं हतैः।
लघयन् खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिसम्पदः। २.१८

भारवि की उक्तियाँ स्वाभाविकता, व्यंग्य तथा पाण्डित्य से भरी पड़ी हैं। भीम की उक्ति वीरता के घमंड से तेज और तर्रार है तो द्रौपदी की उक्ति में युधिष्ठिर को तीखे व्यंग्य सुनाने की क्षमता है —

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेन्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्॥ १.३

पेज-(५)

(५) इस उक्ति के द्वारा द्रौपदी ने युधिष्ठिर के द्वारा उसे जुए दाँव पर लगाने तथा दुःशासन के द्वारा उसके अपमान की घटना की व्यंजना कराकर युधिष्ठिर को तीखा व्यंग्य सुनाया है। इतना ही नहीं युधिष्ठिर की शांतिप्रियता को वह कायरता बताती हुई व्यंग्य करती है कि-

अथक्षमामेव निरस्तविक्रमश्चिराय पर्येषि सुखस्य साधनम्।
विहायलक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकं जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम् ॥(१.४४)

यद्यपि भारवि की शैली माघ की भाँति विकट-समासान्त-पदावली का आश्रय नहीं लेती, तथापि कालिदास जैसी ललित वैदर्भी भी नहीं। शायद कालिदास से माघ तक आने के बीच में काव्यशैली अपना रूप बदलने की चेष्टा कर रही है, भारवि की शैली से ऐसा मालूम होता है।

भारवि कालिदास की अपेक्षा पाण्डित्य प्रदर्शन के प्रति अधिक अनुरक्त हैं। वे अपने व्याकरण ज्ञान का स्थान-स्थान पर प्रदर्शन करते हैं और यही प्रवृत्ति आगे माघ तथा श्रीहर्ष में अत्यधिक हो चली है। भारवि में तन् धातु का प्रयोग अत्यधिक पाया जाता है, उन्हें कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के प्रयोग बड़े पसन्द हैं। व्याकरण की त्रुटियाँ भारवि में बहुत कम हैं किन्तु 'आजघ्ने' (१६-६४) का आत्मनेपदी प्रयोग खटकता है।

विविध छन्दों के प्रयोग में भारवि कुशल हैं। वंशस्थ भारवि का खास छन्द है। इसके लिए क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक' में भारवि की प्रशंसा की है। कालिदास के खास छन्द छः हैं, भारवि के बारह तो माघ के सोलह।

प अन्त में डा० डे० के साथ हम यही कहेंगे कि – भारवि की कला प्रायः अत्यधिक अलंकृत नहीं है किन्तु आकृति सौष्ठव की नियमितता व्यक्त करती है। शैली की दुष्प्राप्य कान्ति भारवि में सर्वथा नहीं है, ऐसा कहना ठीक नहीं होता किन्तु भारवि उसकी व्यंजना अधिक नहीं करते। भारवि का अर्थगौरव जिसके लिए विद्वानों ने उनकी अत्यधिक प्रशंसा की है उनकी गम्भीर अभिव्यञ्जना शैली का फल है किन्तु यह अर्थगौरव एक साथ भारवि की शक्ति तथा दुर्बलता (भावपक्ष की दुर्बलता) दोनों को व्यक्त करता है। भारवि की अभिव्यंजना शैली का परिपाक अपनी उदात्त नियमितता के कारण सुन्दर लगता है, उसमें शब्द तथा अर्थ के सुडौलपन की स्वच्छता है, किन्तु महान् कविता की उस शक्ति की कमी है, जो भावों की स्फूर्ति तथा हृदय को उठाने की उच्चतम क्षमता रखती है।"

पेज-५५